# नेपाल - नेपाली मुसलमानों की समस्यायें एवं समाधान


लेखक

**मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा क़ादरी**

शिक्षकः अलजामियतुल अशरफ़िय्या, मुबारकपुर आजमगढ़



प्रसारण कर्ता

राष्ट्रा उलाम कॉउन्सिल, नेपाल

# नेपाल - नेपाली मुसलमानों की समस्यायें एवं समाधान

मुफ्ती मुहम्मद रज़ा कादिरी मिस्बाही
शिक्षक: अलजामियतुल अशरफिय्या, मुबारकपुर

प्रकाशन
राष्ट्रीय उलमा कोन्सल, नेपाल

**पुस्तकः** नेपाल - नेपाली मुसलमानों
की समस्यायें एवं समाधान

**लेखकः** मुफ्ती मुहम्मद रजा कादिरी मिस्वाही
शिक्षक: अलजामियतुल अशरफिय्या, मुबारकपुर
ईमेल:muftimohdrazaquadrimisbahi@gmail.com
मो0: ७८६०७०४४९१
७५२१०६४४९१

**प्रसारण तिथीः** २०२१ई

**प्रकाशनः** राष्ट्रीय उलमा कोन्सल, नेपाल

**प्रबन्धकः** मौलाना अब्दुस्समद अमजदी
पुत्र मौलाना अब्दुल ह़मीद बरकाती
तारापट्टी, जिला धनोशा, नेपाल

**पुनर्विलोकनः** मास्टर मुहम्मद अफजाल साहब,
कटरा, मुबारकपुर,
पूर्व शिक्षकः अश्रफिया इन्टर कालेज,
मुबारकपुर, आजमगढ़

# सूची

# नेपाल का संक्षिप्त परिचय

"नेपाल" मध्य एशिया के दक्षिण में दो महान देशों, भारत और चीन के बीच हिमालय की तलहटी में प्राकृतिक सुंदरता, आकर्षक परिदृश्य, खेतों, पहाड़ों और घाटियों वाला दुनिया का सबसे सुंदर देश है। यह उत्तर में २८.००N° अक्षांश और पूर्व में ८४.००E° देशांतर पर स्थित है। इसकी सभी सीमाएँ भूमि से घिरी हुई हैं। नेपाल की सीमा उत्तर में चीन से, दक्षिण और पूर्व में भारत से और पश्चिम में बांग्लादेश से केवल २७ किमी की दूरी पर मिलती है। इसका भूमि क्षेत्र १४७१८१ वर्ग किलोमीटर (१५६८२७ वर्ग मीटर) है। नेपाल दुनिया का ४८ वां सबसे अधिक आबादी वाला देश है और क्षेत्रफल के लिहाज से दुनिया का ९३ वां सबसे बड़ा देश है। नेपाल क्षेत्रफल और जनसंख्या के मामले में एशिया में स्थित श्रीलंका, उत्तर कोरिया, फिलिस्तीन, संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत और कतर जैसे एक दर्जन से अधिक देशों से बड़ा है। और कतर जहाँ लाखों नेपाली नौकरी कर रहे हैं, आपको जानकर आश्चर्य होगा कि वह नेपाल से लगभग १३ गुना छोटा है। इसका कुल क्षेत्रफल ११.४२७ किमी है। और जनसंख्या की दृष्टि से नेपाल कतर से लगभग ३२ गुना बड़ा है। २०१६ ईसवी की जनगणना के अनुसार कतर की कुल जनसंख्या ८४०२९० थी जबकि नेपाल की जनसंख्या २७०७०६६० थी।

सैन्य ताकत के मामले में भी नेपाल एक उल्लेखनीय देश है, इसकी सेना दक्षिण एशिया में पांचवीं सबसे बड़ी सेना है। नेपाल की विदेश नीति में भी एक अलग पहचान और महत्व है। १९५५ से नेपाल संयुक्त राष्ट्र का सदस्य है। नेपाल शुरू से ही दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) का सचिवालय रहा है। नेपाल उन देशों में से एक है जो गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सदस्य हैं।

नेपाल की एक बड़ी विशेषता जो अन्य देशों में नहीं यह है कि दुनिया की तीन सबसे ऊंची चोटियां माउंट एवरेस्ट ८८४८ एम कंचनजंघा ८५८६ एम और माउंट ल्होत्से ८५१६ एम नेपाल ही में स्थित हैं। नेपाल उन देशों में से एक है जिनके पास पानी का विशाल भंडार है। नेपाल में दुनिया का २.८% जल भंडार है। यह पानी हिमालय की बर्फीली चोटियों से नेपाल में आता है। नेपाल पानी के मामले में दुनिया का दूसरा सबसे शक्तिशाली देश है।

नेपाल की कोशी, कर्णाली, गण्डकी और हावेर नदियों से बहने वाला पानी भारत की गंगा और जमुना जैसी नदियों को सैराब करता है, नेपाल की छोटी और बड़ी सभी नदियों की संख्या लगभग ६०० है।

## नेपाल की खूबसूरती

नेपाल अपने घने जंगलों, राजसी पर्वत श्रृंखला, शांत मौसम, हरे-भरे परिदृश्य, आकर्षक घाटियों और

सुंदर कृतियों के कारण प्राचीन समय से ही पर्यटकों और संसार के लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। यह एक अफसाना नहीं, एक तथ्य है कि नेपाल दुनिया के नक्शे पर इतना खूबसूरत देश है कि इसकी प्राकृतिक सुंदरता के आगे स्विट्जरलैंड की सुंदरता फीकी पड़ जाती है। कश्मीर और नैनी ताल जैसी सैकड़ों घाटियाँ और राजगीर जैसी सैकड़ों सुंदर जगहें जिन्हें बिहार के लोग बिहार की मांग मानते हैं नेपाल की सीमित सीमाओं में खो जाती है। यदि आप इस पर विश्वास नहीं करते हैं तो एक बार पोखरा के फेवा ताल, गोम्सॉन्ग घाटी, नामचे बाजार, गोर्खा और काठमांडू घाटी की यात्रा अवश्य करें। जो लोग केवल तराई क्षेत्र पर नेपाल का अनुमान करते हैं वह गलतफहमी में हैं, नेपाल की असली सुंदरता पहाड़ों में है।

नेपाल दुनिया का एकमात्र देश है जिसकी राजधानी सभी राजधानियों में उच्चतम स्थान पर स्थित है। यह थी नेपाल की एक हलकी झलक।

## नेपाल का इतिहास

जहां तक नेपाल के इतिहास का सवाल है, तो इसकी प्राचीनता के लिए यह काफी है कि इसका उल्लेख भारत के प्राचीन साहित्य अथर्ववेद, उपनिषद, पुराण और कौटिल्य के अर्थशास्त्रों में मिलता है। यह नौजवानों, वीरों, परिश्रमियों और सूफी संतों की भूमि है। इसका इतिहास साहस और देशभक्ति की घटनाओं

से परिपूर्ण है। अतीत में इसके एक शक्तिशाली देश होने पर इतिहासकारों की यह गवाही काफी है कि नेपाल के सातवें क्रांतिकारी राजा गालि ने महाभारत के युद्ध में अर्जुन का मुकाबला किया था। इस देश पर लगभग चार हजार वर्षों तक गोपाल वंश, महेषपाल वंश, किराँती वंश, सूर्य वंश, सोम वंश, लिच्छवी वंश, ठाकरी वंश, मल्ल वंश और पृथ्वी नारायण शाह वंश के सैकड़ों राजाओं ने शासन किया।

प्राचीन इतिहास से पता चलता है कि प्राचीन काल और मध्य युग में नेपाल के विभिन्न हिस्सों में एक ही समय में कई राजाओं का शासन था। २५ सितंबर १७६८ की तारीख आधुनिक नेपाल के निर्माण का दिन है जब पृथ्वी नारायण शाह ने छोटे छोटे राज्यों को अपने अधीन करके एक स्थिर और संयुक्त राज्य नेपाल की नींव रखी। कुल मिलाकर, नेपाल अपार संभावनाओं और प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध एक गरीब देश है। ये संसाधन इंसानी भी हैं और भौतिक भी। यूरेनियम, जिसका उपयोग परमाणु बम बनाने के लिए किया जाता है, नेपाल के कुछ जंगलों में बिखरा हुआ है। यहां गैस के भंडार मिले हैं। पहाड़ों में सोना, रत्न और खनिज भंडार छिपे हुए हैं। दुनिया की सबसे मूल्यवान जड़ी-बूटियों के उत्पादन के लिए यहाँ की भूमि प्राचीन काल से ही जानी जाती है, यही कारण है कि नेपाली

जड़ी-बूटियों का उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलता है।

## एक देश के रूप में नेपाल के सामने चुनौतियां

प्रिय पाठकों! आपको आश्चर्य होगा कि नेपाल इतने सारे प्राकृतिक संसाधनों और असाधारण क्षमता के साथ एक पिछड़ा और गरीब देश क्यों है। इसे एशिया के पांच सबसे गरीब देशों में क्यों स्थान दिया गया है? यहाँ मुद्रा इतनी डाउन क्यों है? यहां जीविकोपार्जन करना इतना कठिन क्यों है? हर जगह समृद्धि होनी चाहिए, नागरिकों के लिए रोजगार के अवसर होने चाहिए। लेकिन मामला ऐसा नहीं है। यहां चलने के लिए सड़कें नहीं हैं, यात्रा के लिए अच्छी सवारी, रहने के लिए रोजगार, शिक्षा और व्यवसाय के लिए अवसर नहीं हैं। इसका क्या कारण है? नेपाल अभी तक आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर देश नहीं बन सका है. इसके कारणों को समझने के लिए निम्नलिखित तथ्यों का विश्लेषण करें।

हमारे अध्ययन के अनुसार कुछ चीजें हैं जो नेपाल के विकास को रोक रही हैं। यदि इन बाधाओं को हटा दिया जाता है, तो नेपाल अन्य देशों की तुलना में बहुत तेजी से वैश्विक बाजार में अपनी स्थिति स्थापित करने में सफल हो सकता है।

# शाही तानाशाही शासन

नेपाल में हजारों सालों से राजशाही है और यह इतना शक्तिशाली था कि यह २१ वीं सदी की शुरुआत तक चला, जब कि पड़ोसी देशों से राजशाही का अंत हुए डेढ़ सदी बीत गई थी। राजा खुद को तानाशाह, देश का मालिक, लोगों का स्वामी और नागरिकों को अपना गुलाम समझते रहे। लोगों की हालत यह थी कि वे राजा को अवतार और भगवान के रूप में देखने के आदी थे, अतः उनके लिए हर आदेश का पालन करना आवश्यक था और अवज्ञा एक सजा थी। यह प्रक्रिया हजारों वर्षों से चली आ रही थी। २९६०/२०१७ बिकरमी साल में पंचायती व्यवस्था पेश की गई और लोगों की आवाज को दबाने की कोशिश की गई। यह व्यवस्था १९८९/२०४६ बिकरमी साल तक जारी रही।

१ जून को शाही महल में होने वाली दुर्घटना ने देश की स्थिति बदल दी। शाह वीरेंद्र, उनकी पत्नी महारानी ऐश्वर्या देवी और उनके परिवार के सात अन्य सदस्यों की निर्मम हत्या ने देश को हिला कर रख दिया। शाही महल में होने वाली साजिशों ने देश के लोगों की आँखें खोल दी। स्थिति ने मोड़ लिया और दशकों से राख में दफन लोकतंत्र की बहाली की चिंगारी फिर से प्रज्वलित हुई, और लंबे समय से स्थापित तानाशाही सरकार के खिलाफ विद्रोह की लहर माओवादी आंदोलन के प्रभाव में शुरू हुई। सेना और माओवादियों में युद्ध हुआ जिस

में १०,००० से अधिक लोगों की मौत हई, देश पूरी तरह से अस्थिर हो गया, अशांति, बंद और विरोध प्रदर्शनों ने देश की अर्थव्यवस्था, व्यापार और पर्यटन को नष्ट कर दिया। अंत में, २३ दिसंबर २००७ को, कम्युनिस्ट माओवादियों और सरकार के बीच राजशाही का अंत करने पर एक समझौता हआ। २८ मई २००८ को, ६०१ सदस्यों की संविधान सभा ने नेपाल की २३९ साल की राजशाही का अंत करते हुए नेपाल को संघीय, गणतंत्रात्मक, धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र घोषित किया।

राजाओं की रुचि व्यक्तिगत यात्रा, अवकाश और विलासितापूर्ण जीवन से अधिक कुछ नहीं थी, यही वजह है कि नेपाल दुनिया के अन्य विकसित राज्यों की श्रेणी में शामिल नहीं हो सका।

## राजनीतिक गुलामी की बेड़िया

इस देश को पिछड़ेपन के रास्ते पर लाने के मुख्य कारणों में से एक यह है कि यह राजनीतिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं है। जब देश की घरेलू और विदेशी नीतियां बाहर से तय होने लगे तो कोई भी देश को गिरावट से नहीं बचा सकता है। राजनैतिक गुलामी का यह पट्टा जो जंग बहादुर राणा प्रधानमंत्री के समय से इस दोश के गले में पड़ा अब तक नहीं उतर सका। अगर इस को आज ही उतार दिया जाए तो नेपाल का नक्शा कल से ही बदल जाएगा। जिस देश के नेता राजनीतिक दलों को चलाने के लिए अपने अस्तित्व की

भीख ऋण के रूप में दूसरों से मांगते हों, वह देश को विकास के रास्ते पर कैसे ले जा सकते हैं? एक बार सत्ता में आने के बाद, उनके ऋणों का भुगतान करने में ही उनका कार्यकाल समाप्त हो जाता है। इसलिए, नेपाल को अन्य देशों के राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त करना आवश्यक है। हम एक स्वतंत्र गणराज्य हैं, हम अपने मामलों का फैसला स्वयं करेंगे, हम अपना भविष्य खुद तय करेंगे, जब तक नेताओं की यह सोच नहीं होगी, वे कठपुतलियों के रूप में इस्तेमाल होते रहेंगे। अब चीजें बदल रही हैं और केपी शर्मा ओली, पूर्व प्रधान मंत्री और प्रचंड द्वारा उठाए गए कुछ कदमों ने साबित कर दिया है कि वे देश को स्वतंत्रता की ओर ले जाने का प्रयास कर रहे हैं। यदि वे ऐसा करने में सफल होते हैं, तो यह नेपाल की एक बड़ी सफलता होगी।

## आत्मनिर्भरता नीति

नेपाल ने कसम खा रखी है कि हम आर्थिक गैर-निर्भरता की नीति का पालन नहीं करेंगे, और हम अपना पूरा जीवन दूसरों की दया पर जीएंगे। यह सर्वविदित है कि नेपाल, भारत, यूरोपीय संघ और चीन के आयात पर बहुत अधिक निर्भर है, उसके माल का सबसे बड़ा खरीदार नेपाल है। भारत और चीन कदापी नहीं चाहेंगे कि माल के उत्पादन के मामले में नेपाल आत्मनिर्भर बने। यही कारण है कि नेपाल दवा से लेकर कपड़े, दैनिक आवश्यकताएं, वाहन और सब कुछ ही

भारत, यूरोपीय संघ, जर्मनी और चीन से खरीदता है। एक दिन में यहां का लगभग एक अरब रुपया भारत और चीन को जाता है और नेपाल इन दोनों देशों के माल बेचने का बाजार बना हुआ है।

नेपाल को गुलामी और चापलूसी की नीति छोड़ कर स्वतंत्रता की नीति अपनानी चाहिए। देश में सभी प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन के कारखाने यहां स्थापित किए जाने चाहिए ताकि नेपाल का पैसा नेपाल में ही रहे और यहां का पैसा यहां के लोगों के विकास पर खर्च हो। जब देश में सैकड़ों कारखाने स्थापित हो जाएंगे, तो यह लाखों लोगों के रोजगार की समस्या को हल करदेगा। नेपाल में आवश्यक वस्तुएं महंगी होने का कारण यह है कि यहां सभी चीजों हम बाहर की उपयोग करते हैं और वे उच्च कीमतों पर खरीद कर हमें महंगी दी जाती है। उदाहरण के लिए, चाय और पान को ले लीजीए, नेपाल में २० रुपये से कम कीमत पर नहीं मिलेंगे और गाड़ियों पर कीमत से दोगुना कर।

## ईमानदार नेतृत्व की कमी

यह नेपाल के लिए बहुत दुख की बात है कि उसे ऐसे बहुत कम नेता मिले हैं जो अपने निजी हितों से ऊपर उठकर देश और लोगों के विकास के लिए काम करें। देश की संपत्ति का त्याग किए बिना अन्य देशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित करें। जिस परिवार को कभी सत्ता के सिंहासन पर बैठने का अवसर मिला, उसने

सबसे पहले अपनी सात पीठों का प्रबंधन किया और जनता को सड़कों पर ला खडा किया। राष्ट्रीय खजाने का अंधाधुंध इस्तेमाल किया गया। इसी लिए जो लोग इस स्थिति से अवगत हैं, वह यह कहने के लिए मजबूर हैं कि यहां के लोग अमीर हैं और सरकार गरीब है।

## आर्थिक निर्भरता की नीति

नेपाल बड़ी जनशक्ति, पानी और आर्थिक संसाधनों के बावजूद दुनिया के सबसे गरीब देश के रूप में जाना जाता है। २०१६ के रिकार्ड के अनुसार, इसकी सकल घरेलू उत्पाद की दर २१.१४ बिलियन अमेरिकी डॉलर थी।

जबकि २०१२ में जीडीपी दर १७.९२१ बिलियन अमेरिकी डॉलर थी, जो नेपाली मुद्रा से १८ ट्रिलियन, ९१ बिलियन, ९१ करोड़, ९८ लाख, २५६१६ रुपये है।

२०१८ के जीडीपी रिपोर्ट के अनुसार, नेपाल के सकल घरेलू उत्पाद का मूल्य दुनिया के आर्थिक मूल्य का ०.०३% है।

२०१० के वैश्विक सर्वे के अनुसार, नेपाल के २५.२% नागरिक राष्ट्रीय गरीबी रेखा से नीचे हैं। उनकी दैनिक आय १.९० अमेरिकी डॉलर से भी कम है।

२०१४ में ग्रामीण गरीबी पोर्टल के अनुसार, नेपाल के ३०% से अधिक लोग गरीबी रेखा से नीचे रह रहे हैं।

नेपाल दुनिया का १५० वां सबसे बड़ा निर्यातक है। २०१५ में नेपाल ने 5909M अर्थात ९०९ मिलियन

डॉलर मूल्य का निर्यात किया, और S6.61B का सामान आयात किया। नकारात्मक व्यापार के परिणामस्वरूप S5.7B का नुकसान हआ। २०१५ में नेपाल, भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, यूएई और स्विट्जरलैंड को अपना माल निर्यात करता है।

इस आंकड़े से स्पष्ट है कि नेपाल अन्य देशों से खरीदे गए माल का दसवां हिस्सा भी आयात नहीं करता है। पेट्रोल, गाडी, दवा, वस्त्र, मशीनी भागों से लेकर रोजाना उप्योग की जाने वाली वस्तुओं तक यह भारत, यूरोपीय संघ, जर्मनी, संयुक्त अरब अमीरात और चीन से खरीदता है। ऐसे में महंगाई बढ़ती है, देश की अर्थव्यवस्था की विकास दर घटती है। इसी कारण नेपाल में जीवन मुश्किल हो गया है। यहां तक कि एक चाय और पान भी २० रुपये से कम में उपलब्ध नहीं है, गाड़ियों पर १२०% का अतिरिक्त कर किसी व्यक्ति की पीठ को तोड़ने के लिए पर्याप्त है।

देश में फैक्ट्रियों की इतनी कमी है कि सभी सामान विदेशों से आयात करने पड़ते हैं। न ही विदेशी कंपनियों को पर्याप्त संख्या में निवेश करने की अनुमति है। यदि सरकार ईमानदारी से नेपाल में बेरोजगारी की समस्या को हल करना चाहती है, तो इस के लिए आवश्यक है कि नेपाल अपना माल स्वयं बनाए, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों को निवेश करने के लिए आमंत्रित करे ताकि एक तरफ नेपाल आर्थिक रूप से मजबूत भी

हो और दोसरी ओर लाखों बेरोजगारों को रोजगार भी मिले।

वर्तमान में, देश में जितने कारखाने हैं वह इसकी जरूरत पूरी करने के लिए अपर्याप्त हैं। हमारे नागरिक विदेशी कंपनियों में काम करने के लिए खाड़ी देशों की यात्रा करते हैं। अपना घर, पत्नी और बच्चों को छोडकर वे अपना कीमती जीवन वहीं बिताते हैं। क्या बेहतर होता अगर हमारी सरकार उन्हें देश में ही रोजगार प्रदान करने के लिए कोई ठोस कदम उठाती।

यह बात लोगों से छुपी नहीं है कि जब भी कोई अंतरराष्ट्रीय कंपनी नेपाल में निवेश करने के बारे में सोचती है, तो हमारे पड़ोसी देश राष्ट्रीय नेताओं पर इतना दबाव डालते हैं कि वह उसे अनुमति नहीं दे पाते, वे कहते हैं कि सभी आवश्यक उपकरण हम तो तुम्हें प्रदान कर ही रहे हैं, तुम्हें कंपनी खोलने की क्या आवश्यकता है? क्योंकि उन्हें डर है कि प्रतिदिन व्यापार दवारा उन्हें नेपाल से मिलने वाले लगभग १० मिलियन रुपये बंद हो जाएंगे और नेपाल को उनके माल की आवश्यकता नहीं होगी, इसलिए वे नेपाल को मुहताज रखना चाहते हैं।

अब समय आगया है कि सभी व्यक्तिगत स्वार्थों को छोडकर हमारे देश के नेता देश के विकास के पक्ष में स्वतंत्र निर्णय लें, ताकि यह देश आर्थिक संकट से निकल कर एक विकासशील राज्य में बदल सके।

# राष्ट्रीय संसाधनों और खजाने का दुरुपयोग

नेपाल के विकास का मार्ग अवरुद्ध रहेगा जब तक उसके नेता नेशनल बैंक का उपयोग लोगों के कल्याण के लिए नहीं करेंगे। मैं देख रहा है कि यह देश चंदा खाने वालों का देश बन गया है। इसकी गरीबी को देखते हुए, कई देश समय-समय पर इसे वित्तीय सहायता प्रदान करते रहते हैं, और यह सहायता नगण्य नहीं होती, कभी-कभी इतना होता है कि उससे एक नया नेपाल बनाया जा सकता है। मैं यहां पर उसका सिर्फ एक उदाहरण देना चाहूंगा। आपको याद होगा कि २५, २६ अप्रैल २०१५ को नेपाल में इतना भयंकर भुकंप आया था कि विशाल गगनचुंबी इमारतें मलबे के ढेर में बदल गई। बड़ी बड़ी बस्तियां तबाह हो गई। ८६३२ की जान चली गई थी। नेपाल में इस भूकंप के कारण जान-माल की भारी क्षति हुई। इस भूकंप से हुई तबाही को देखते हुए, दुनिया भर के देशों ने सहयोग का हाथ बढ़ाया। आजाद दाइरतुल्मआरिफ विकिपीडिया की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के ३५ देशों ने डॉलर एवं पोन्ड के रूप में नेपाल को जो बड़ी सहायता राशि प्रदान की, उसका अनुमान १२९९.२०८६६४५३५ बिलियन अमेरिकी डॉलर है। अर्थात बारह सौ निन्यानवे अरब, बीस करोड़, छियासी लाख, चौसठ हजार पांच सौ पैंतीस अमेरिकी डॉलर। यदि इससे भी छोटा करें तो १.२९९२०८६६४५३५ बनते हैं। यानी दस खरब, उन्तीस अरब, बानवे करोड़,

छियासी लाख, चौंसठ हजार पांच सौ पैंतीस अमेरिकी डॉलर नेपाल को सहायता के रूप में प्रदान किए गए।

मैं समझता हूं कि यह इतना अधिक धन है कि इसके समुचित उपयोग से एक नए विकासशील नेपाल का नए सिरे से निर्माण किया जा सकता था, हर गाँव में हर क्षेत्र में सड़कों और रेल गाडियों का एक उत्कृष्ट नेटवर्क बिछाया जा सकता था, हजारों नए कारखाने खोले जा सकते थे, लाखों बेघर लोगों को एक नया घर मुहैया कराया जा सकता था, लेकिन क्या हुआ? क्या कोई है जो इस सवाल का जवाब दे सकता है? रिश्वत और चंदाखोरी की यह आदत नेपाल के एक शक्तिशाली देश बनने की राह में बाधा है। यह एक अवरोध है जिसे तोड़ना होगा।

## पर्यटन को रोचक और आकर्षक बनाना

नेपाल पर्यटन से भी बहुत लाभान्वित होता है। यहां सैकड़ों आकर्षक और दर्शनीय स्थल हैं, जिन्हें देखने के लिए दुनिया भर से पर्यटक आते हैं। लेकिन इन जगहों की ठीक से सफाई नहीं की जाती है। सरकार को मनोरंजक स्थानों की सजावट पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इन मनोरंजक स्थानों के पास एक कृत्रिम संग्रहालय भी स्थापित किया जाना चाहिए जो नेपाल की प्राचीन और आधुनिक सभ्यता और इतिहास की झलक पेश करे।

## सामाजिक सौहार्द और सहिष्णुता के लिए इंटरफेथ संवाद की व्यवस्था करना

हमारा देश बहुराष्ट्रीय, भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक विशेषताएं रखता है, इसलिए यथासंभव शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और सहिष्णुता के वातावरण को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। यहां की सरकार और सामाजिक संस्थाओं को समय-समय पर विभिन्न धर्मों के नेताओं को बुलाकर उनके बीच अंतर-संवाद का अवसर मुहैया करना चाहिए। और विभिन्न धर्मों में सामान्य मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए सब मिलकर प्रयास करें।

ताकि विभिन्न धर्मों के अनुयायियों और विभीन्न मानवीय तथा भाषाई वर्गों से संबंधित लोगों के बीच जो गलतफहमी है उसे दर किया जा सके। देश में मानवीय सहिष्णुता स्थापित की जा सके। भाईचारे को बढ़ावा मिले, नफरत का माहौल समाप्त हो और संप्रदायों को परास्त किया जा सके जो इस देश को भी भारत की तरह युद्ध का मैदान बनाना चाहते हैं।

## लेखकों, साहित्यकारों, कलाकारों और बुद्धिजीवियों की स्वीकृति

किसी भी देश की संस्कृति और समाज के विकास में विदवानों तथा साहित्यकारों की महत्वपूर्ण भूमिका

होती है। उनकी सेवाओं को सरकारी और गैर-सरकारी दोनों स्तरों पर मान्यता दी जानी चाहिए। यदि उन्हें स्वीकार नहीं किया जाता है, तो विकास की गति धीमी हो जाती है। यह हतोत्साहित करने वाला होता है। हमारा देश बुद्धिजीवियों दवारा ही जाना जाता है, वे इस देश की असली तस्वीर बाहरी दुनिया के सामने पेश करते हैं। इसलिए, उन्हें सभी परिस्थितियों में सराहा जाना चाहिए।

हमें एहसास होता है कि इस देश में उलमा (विद्वानों), बुद्धिजीवियों, लेखकों और कलाकारों को सम्मानित करने की आवश्यकता महसूस नहीं की जाती। यही कारण है कि बहत कम संस्थान हैं जो उन्हें वित्तीय सहायता और अन्य पुरस्कार प्रदान करें।

## शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य की जानी चाहिए

सभी के लिए शिक्षा अर्जित करने की सुविधा सुनिश्चित की जानी चाहिए। नेपाल आज भी शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पीछे है। यहां ३०% लोग प्राथमिक स्कूल से ही पढ़ाई छोड़ देते हैं। उच्च शिक्षा के लिए अधिक तकनीकी संस्थानों और विश्वविद्यालयों की स्थापना की आवश्यकता है।

## नेपाली मुसलमानों की समस्याएं

कारण और समाधान इतिहास के एक वस्तुनिष्ठ अध्ययन ने साबित कर दिया है कि मुसलमान लगभग

एक हजार वर्षों से इस देश में मौजूद हैं। इतिहास ने यह भी साबित कर दिया है कि नेपाल में रहने वाले सभी लोग बाहर से आए हैं, कोई भी वहां का यथार्थ निवासी नहीं है, कोई भी यह दावा नहीं कर सकता है कि जब से मनुष्य अस्तित्व में आया है तब से हम यहाँ रहते हैं। प्राचीन नेपाली जनजातियों की वंशावली मंगोल जातियों से मिलती है, जो चीन और मंगोलिया से पलायन करके नेपाल में बस गई, जबकि नेपाल पर राज करने वाले सभी राजाओं की वंशावली भारत से ही मिलती है। जिस तरह नेपाल की प्राकृतिक सुंदरता, स्वच्छ और पारदर्शी जलवायु के कारण गैर-मुस्लिम राष्ट्र यहां बस गए, मुस्लिम भी विभिन्न कारणों से यहां बसते रहे। सरकारी जनगणना के अनुसार मुस्लिम वर्तमान में ४.४% (चार दशमलव चार प्रतिशत) पर देश के तीसरे सबसे बड़े अल्पसंख्यक हैं।

निस्संदेह, मुसलमानों को यहां कई तरह से समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उनमें से कुछ सरकारों द्वारा और कुछ खुद मुसलमानों की लापरवाही के कारण उत्पन्न हुई हैं।

हम नीचे कुछ प्रमुख मुद्दों का संक्षेप में उल्लेख करते हैं।

## शैक्षिक मुद्दे

यदि विचार किया जाए तो ज्ञात होगा कि शेष समस्याएं भी शैक्षिक समस्याओं के गर्भ से उत्पन्न

हुई। क्योंकि ज्ञान मानवीय समस्याओं को हल करता है। यह उसे हानि से बचाता है, यह उसके अंदर जागरूकता पैदा करता है, इसलिए ज्ञान से दूर रहने वाले राष्ट्र की समस्याओं को कोई भी हल नहीं कर सकता है।

जहां समस्याएं हैं, संभावनाएं भी छिपी होती हैं, लेकिन मानव की आंखें समस्याओं तक तो पहुंचती हैं, संभावनाओं तक नहीं पहुंच पाती। हमें ऐसा लगता है कि राजशाही में मुस्लिम समुदाय की शिक्षा और प्रशिक्षण को जानबूझकर उपेक्षित किया गया है। प्रथम, यह आमतौर पर एक अनपढ़ राष्ट्र था जिसके लिए न स्कूल थे न विद्यालय, सरकार को इन्हें साक्षर बनाने की क्या पड़ी थी। दूसरे, हमने भी अपने समाज को शिक्षित समाज बनाने के लिए कोई आंदोलन नहीं चलाया, परिणामस्वरूप, एक अज्ञानी समाज पनपता रहा।

यदि मुस्लिम समुदाय में शिक्षा का कोई निशान है, तो यह टूटी हुई चटाई पर बैठने वाले आदरनीय उलमा के प्रयासों का परिणाम है। अगर ये इस्लामी मदरसे और हर गाँव में छोटी छोटी पाठशाला (मकतब) स्थापित न होती, तो नेपाली मुसलमान धर्म से पूरी तरह कट जाते। उच्च शिक्षा के लिए मुसलमानों की प्रवृत्ति नगण्य है। किसी गाँव में मुश्किल से मुस्लिम

स्नातक मिल सकेगा। अधिकांश लोग हाई स्कूल से पहले ही शिक्षा छोड़ देते हैं।

जब उन्हें शिक्षा नहीं मिलती है, तो सरकारी नौकरियों में उनके प्रवेश की संभावना भी समाप्त हो जाती है। इस प्रकार, मुस्लिम कई महत्वपूर्ण पदों पर नहीं आपाते।

## पाठशालयों (मकातिब) की शिक्षा का सुधार

कम से कम पिछले दो दशकों से, लगभग हर मुस्लिम बस्ती में एक मकतब स्थापित हो चुका है। लेकिन मकतब की यह शिक्षा पर्याप्त नहीं है। कोई मकतब पाठ्यक्रम निर्धारित नहीं है, कक्षाएं तय नहीं हैं, सिस्टम में कोई नवीनता नहीं है। इसके अलावा ५०-१०० छात्रों को पढ़ाने के लिए एक शिक्षक जिम्मेदार है।

इस समस्या का हल यह है कि मकतब की शिक्षा को व्यवस्थित किया जाए, मकतब को आधुनिक और धार्मिक शिक्षा का संगम बनाया जाए, जो विषय नेपाली मुस्लिमों के लिए आवश्यक हैं जैसे उर्दू, अरबी, अंग्रेजी, नेपाली, अंकगणित, विज्ञान, समाजशास्त्र और पर्यावरण, उनका शिक्षण मकतब में औपचारिक होना चाहिए। प्रत्येक पाठशालय में, इस्लामिय्यात के शिक्षकों के साथ आधुनिक विज्ञान के शिक्षकों को भी नियुक्त किया जाना चाहिए। कक्षाएं औपचारिक होनी चाहिए, ग्रेड निर्धारित किए जाने चाहिए, परीक्षा प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए और फिर इसके

आधार पर पदोन्नति का प्रमाण पत्र जारी किया जाना चाहिए। चार या पाँच साल तक छात्रों को केवल उर्द और नाज़रा पढ़ने तक सीमित रखने का नुकसान यह होता है कि वे अब स्कूल के लिए पात्र नहीं रह जाते, और स्कूलों में केवल आधनिक शिक्षा का नकसान यह होता है कि छात्र धर्म से पूरी तरह से दूर हो जाते हैं। ऐसे में निर्देशकों पर अनिवार्य हो जाता है कि एक ही स्कल या मदरसे में दोनों प्रकार की शिक्षा स्थापित करें। दुर्भाग्य से, हमारे पास ऐसे स्कूल या मदरसे नहीं हैं, यदि हैं भी तो उन्हें उंगलियों पर गिना जा सकता है। बुटवल में श्री रूहल अमीन साहिब द्वारा स्थापित स्कूल, काठमांडू में जामिया गाँसिया अहसनुल बरकात, नया बाजार शिक्षा की इस शैली के संस्थानों के लिए एक उत्कृष्ट व्यावहारिक उदाहरण हैं। अमीर लोग यदि इस ओर व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी आकर्षित हो जाएं तो उन्हें इसमें महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हो सकती है।

## ज्ञान प्राप्त करने से पहले पैसा कमाने के लिए खाड़ी देशों की यात्रा

नेपाली मुसलमानों के लिए यह बड़ी चुनौती है कि हम अपने भविष्य को स्वयं अपने ही हाथों दफन करने में लगे हैं। यह एक कड़वा सच है कि चेतना की आँखें खुलने से पहले ही मुस्लिम माता-पिता अपने बच्चों के बारे में सपने देखना शुरू कर देते हैं। और १८ वर्ष की

आयु तक पहुंचते पहुंचते उनका पासपोर्ट तैयार होचुका होता है। चंद सिक्कों की लालच में गरीब बच्चों के माता-पिता बच्चों की शैक्षिक हत्या के लिए तैयार हो जाते हैं। यह सामान्य विश्लेषण है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वालों के बच्चे बड़ी संख्या में प्राथमिक स्तर की शिक्षा या उच्च विद्यालय से पहले ही पढ़ना छोड़ देते हैं और खाड़ी देशों की यात्रा करते हैं।

मुसलमानों के इस सामान्य रवैये के परिणामस्वरूप, निरक्षरता दर में काफी वृद्धि हुई है। उनके विचार में शिक्षा का कोई महत्व नहीं है। वे धन और पैसा को ही सब कुछ मानते हैं। यह उन परिवारों में अधिक आम है जहां घर के सभी सदस्य या अधिकांश अज्ञानी हैं, उनका काम केवल पैसा कमाना, जमीन खरीदना और घर बनाना है, एक मुसलमान बच्चों की शिक्षा पर अपनी कमाई का १०% भी खर्च नहीं करता है।। वर्तमान में, शिक्षा पर केवल उन परिवारों में जोर दिया जाता है जो पहले से ही शिक्षित हैं।

इन नौजवानों की गाढ़ी कमाई का साधन ईट, बालू, पत्थर, सीमेंट और मिट्टी के अलावा कुछ नहीं होता। इससे उनका भौतिक विकास तो होता है लेकिन बौद्धिक विकास की प्रक्रिया रुक जाती है। सोच सीमित हो जाती है और यह वह अज्ञानता है जो समाज में बौद्धिक, भौतिक और सामाजिक कदाचार का द्वार खोलती है। जीवन के वास्तविक उद्देश्य से अपरिचय

बढ़ता चला जाता है। घर से दूर होने के कारण बच्चों को उचित प्रशिक्षण नहीं मिल पाता है। सामाजिक अनैतिकता को बढ़ावा मिलता है।

## धार्मिक शिक्षा के लिए मदरसों की आत्मनिर्भरता

यह नेपाल के मदरसों के लिए किसी त्रासदी से कम नहीं है कि वे अभी तक शिक्षा में आत्मनिर्भर नहीं हए हैं, यहां के छात्र गणित और अन्य प्रारंभिक शिक्षा के लिए भी भारतीय मदरसों के मुहताज है, जबकि हम मदरसों के नाम पर देश भर में सैकड़ों संस्थानों का एक नेटवर्क देखते हैं। इसका क्या कारण है? नेपाल की अपनी पहचान इस्लामिक विज्ञान को बढ़ावा देने वाले देश के रूप में क्यों न हो सकी? इसके कारण इस प्रकार हैं:

१. नेपाल के मदरसों में व्यवस्था की कमी है, संस्थान में अच्छे शिक्षक हों, छात्रों की संख्या भी उल्लेखनीय हो, इमारतें भी आकर्षक हों लेकिन अगर व्यवस्था सही नहीं तो वह संस्थान कभी भी वांछित परिणाम प्राप्त नहीं कर सकता है।

२. योग्य और प्रतिभाशाली अध्यापकों की कमी, किसी भी संस्थान को उसके चरम पर पहुंचाने में उसके प्रतिभाशाली अध्यापकों का हाथ होता है। उनके ईमानदार प्रयासों से, संस्थान अपनी एक मान्यता

बनाता है। नेपाल में मदरसों के साथ समस्या यह है कि यहां बहुत कम प्रतिभाशाली शिक्षक हैं और अगर ऐसे लोग मिल भी जाएं तो उनका प्रवास बहुत कम होता है।

## शिक्षकों के वेतन का मुद्दा

नेपाल के दिमाग, यहाँ के विद्वान और शिल्पकार नेपाल के लिए काम करने में सक्षम नहीं हैं, आवश्यक वेतन न मिलने के कारण उनकी घरेलू और आर्थिक जरूरतें पूरी नहीं होती, जिसके कारण वे खाड़ी देशों या भारत में धार्मिक संस्थानों में मुलाजमत करने के लिए मजबूर होते हैं। नेपाल में सरकार की ओर से मदरसों का समर्थन न करने के कारण ये सभी समस्याएं उत्पन्न हुई। न ही मुसलमानों ने मदरसों की आत्मनिर्भरता और उसकी आर्थिक स्थिरता पर ध्यान दिया।

## मदारिस के पाठ्यक्रम और शिक्षा प्रणाली का नवीनीकरण

नेपाल के अधिकांश मदरसों की स्थिति यह है कि वे प्राचीन पद्धति पर हैं और अभी भी मुल्ला निज़ामुद्दीन सुहालवी अलैहिर्रह़मा के समय की शिक्षा प्रणाली का पालन करते हैं। समय के मद्देनजर किए जा रहे नवाचारों और परिवर्तनों का लाभ उठाने के लिए तैयार नहीं हैं। इस नवाचार को भारत में तो देखा जा

सकता है, लेकिन नेपाल में अभी तक ऐसा महत्वपूर्ण बदलाव नहीं आसका है।

आज के पाठ्यक्रम में विषेश रूप से अरबी, अंग्रेजी, नेपाली और उर्दू भाषओं पर ध्यान केंद्रित करने के साथ ही गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, पारिस्थितिकी और समाजशास्त्र को भी पाठ्यक्रम का भाग बनाने की आवश्यकता है। ताकि यहां शुद्ध नेपाली भाषा में प्रचार करने वाले प्रचारक पैदा हो सकें, और ये छात्र मदरसों से स्नातक होने के बाद अगर आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में जाना चाहें तो वहां भी जा सके।

## मदरसों में पुस्तकालय का अभाव

मदरसा जो ज्ञान की चिमनी है वहां अगर पुस्तकालय की अवधारणा न हो तो हमारे लिए इससे बड़ी त्रासदी क्या हो सकती है। नेपाल के अधिकांश मदरसों में अभी तक पुस्तकालय स्थापित नहीं किए गए हैं। वे केवल कुछ पाठ्यपुस्तकों के संग्रह को ही पुस्तकालय मानते हैं।

और अगर कहीं पुस्तकालय के नाम पर एक कमरा है भी तो उसकी स्थिति इतनी विकट है कि उसमें न तो बैठने के लिए कुर्सियां होंगी, न साफ और पारदर्शी वातावरण होगा, न किताबों की कोई व्यवस्था होगी, अलमारी में कुछ बिखरी हई किताबें मिलेंगी, जिन पर किताब की प्रविष्टि संख्या भी नहीं लिखी होगी, इसका

कारण यह है कि यहाँ पुस्तकालय की गलत धारणा बहुत ही अवैज्ञानिक है।

पुस्तकालय को स्थायी कर्मचारियों की आवश्यकता होती है। यह एक स्थायी विभाग है जिसके लिए एक औपचारिक अलग भवन होना चाहिए, सभी पुस्तकों की प्रवेश संख्या कंप्यूटर में दर्ज होनी चाहिए। शास्त्र या भाषा के अनुसार पुस्तकों को सूचीबद्ध किया जाना चाहिए। विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित राष्ट्रीय समाचार पत्र दैनिक रूप से वहां पहुंचना चाहिए, पत्रिकाओं और शोध पत्रिकाओं को नियमित रूप से उसे खरीदना चाहिए और छात्रों को अध्ययन की पूरी स्वतंत्रता दी जानी चाहिए ताकि हमारे पिछड़ेपन को दूर किया जा सके।

## मदरसा के शिक्षक दैनिक नेपाली भाषा का अखबार पढ़ें

मैं अपने अनुभव के आलोक में, कह सकता हूँ कि मदारिस के ९०% शिक्षक नेपाल में प्रकाशित समाचार पत्र नहीं पढ़ते, ९५% मदरसे अपने मदरसों में समाचार पत्र नहीं मंगवाते हैं, फिर वे अपने पिछड़ेपन के लिए दूसरों को क्यों दोष देते हैं। आप स्वयं इसके लिए जिम्मेदार हैं। जिस देश के उलमा वर्तमान स्थिति से अनभिज्ञ हों, उनसे देश के नेतृत्व की उम्मीद कैसे की जा सकती है? उलमा को स्वयं अखबार पढ़ना चाहिए

और मुस्लिम राष्ट्र को भी समाचार पत्र पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि वे सूचित रहें और अखबार के माध्यम से मुस्लिम मुद्दों के पक्ष में अपनी आवाज उठा सकें।

## उलमा मदरसों में पढ़ाई के बाद विश्वविदयालयों में जाएं

अब मैं विशेष रूप से अपने छात्रों और उलमा समुदाय से यह कहना चाहंगा कि वे उपदेश देने के लिए फजीलत तक पढ़ लेने को पर्याप्त न समझें। उन्हें अपनी शैक्षणिक उन्नति और आर्थिक समृद्धि के लिए विश्वविद्यालय की दुनिया में कदम रखना चाहिए ताकि वे अपनी डिग्री के आधार पर स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षकों, व्याख्याताओं और प्रोफेसरों जैसे पदों पर पहज सकें।

उलमा को एम. फिल, एम.ए., बी. ए., और पी.एचडी आदी करना जाहिए ताकि यहां के आधुनिक विश्वविद्यालयों में भी इसकी उपस्थिति संभव हो सके।

## रक्षा और सैन्य क्षेत्रों में मुसलमानों की भागीदारी

यह मुसलमानों के लिए भी दुखद स्थिति है कि हर क्षेत्र में हमारा प्रतिनिधित्व और भागीदारी, चाहे वह

सेना हो या पुलिस, न्यायपालिका या विधायिका, शून्य से नीचे है। विशेष रूप से रक्षा और सैन्य क्षेत्रों में, मुसलमान न के बराबर हैं, न मुसलमानों को इसमें कोई दिलचस्पी है। सरकार ने भी जानबूझकर इस क्षेत्र में मसलमानों की अनदेखी की है। ऐसा नहीं है कि हमारे यवा इस क्षेत्र में नहीं जा सकते, बलकि हमारा विश्वास है कि अगर उन्हें अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया जाए तो वे दूसरों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन, साहस और बहाद्री दिखा सकते हैं। सरकार को शक्ति संतुलन बनाए रखते हए उनकी संख्या के अनुसार सेना और पुलिस विभागों में मुस्लिम युवाओं की भर्ती सुनिश्चित करनी चाहिए।

## सिविल सेवाओं में मुसलमानों की भागीदारी

इस विभाग को प्रशासन का मस्तिष्क कहा जाता है और वास्तव में यह विभाग ही होता है जो सरकार की व्यावहारिक जिम्मेदारियों को परा करता है। वही एस. पी., डी. एस. पी., एन.ए.एस. या एन.पी.एस. आदि बनते हैं। इसमें मुसलमानों की भागीदारी और प्रतिनिधित्व भी शून्य है। नेपाल सरकार को भेदभावपूर्ण रवैया समाप्त करना चाहिए और समान विकास के अवसर प्रदान करके हर समुदाय के प्रवेश को सुनिश्चित करना चाहिए। और उनकी जनसंख्या के अनुसार उनके लिए आरक्षण करना जाहिए।

# नेपाली मुसलमानों का आर्थिक जीवन

एक तो नेपाल एशिया के पांच सबसे गरीब देशों में से एक है और दूसरी बात ये कि इस में भी मुसलमानों की स्थिति सबसे खराब है। सरकारी नौकरियों में मुसलमान १% से अधिक नहीं हैं। शिक्षा, वाणिज्यिक, राजनीतिक, और सैन्य क्षेत्रों में मुसलमानों का प्रतिनिधित्व उल्लेखनीय नहीं है। देश में मुसलमानों के आर्थिक विकास की संभावनाएं बहुत सीमित हैं। और इसके कई कारण हैं। अधिकांश मुस्लिम समुदाय कृषि पर निर्भर हैं, बहुत से मुसलमान श्रमिक हैं। व्यापार के क्षेत्र में कम संख्या में मुसलमान दिखाई देते हैं। उन व्यापारियों में कश्मीरी मल के नेपाली मुसलमान हैं, उसके बाद इराकी हैं, तीसरे स्थान पर तिब्बती मुसलमान हैं और चौथे स्थान पर तराई क्षेत्र में रहने वाले मुसलमान हैं। जब मुसलमानों को सरकारी क्षेत्र में रोजगार के अवसर नहीं मिले, तो उन्हें अन्य संभावनाओं की तलाश करनी चाहिए थी और व्यापार के क्षेत्र को अपनाना चाहिए था, लेकिन वर्तमान में व्यापार करने के लिए भी ज्ञान, बुद्धि और पूंजी की आवश्यकता होती है, मुसलमान ज्ञान के क्षेत्र में पिछड़ने के कारण व्यापार के क्षेत्र में भी पिछड़ गया।

# नेपाली मुसलमानों की खाड़ी देशों पर निर्भरता

बढ़ती महंगाई, देश में रोजगार के अवसरों के न होने तथा आर्थिक तंगी के कारण समृद्ध जीवन की तलाश में नेपाली मुसलमान सऊदी अरब, दोहा, कतर, बहरीन, ओमान, मलेशिया, दबई, कतर, कुवैत और मस्कट जैसे देशों की यात्रा करते हैं। वे यहां की कंपनियों में मजदूर के रूप में काम करते हैं और यह प्रक्रिया लगभग ३०-४० वर्षों से चल रही है और इन देशों में हर साल उनकी संख्या बढ़ रही है। इन देशों में, नेपाली मुसलमानों ने कड़ी मेहनत की उसके बाद उनकी गरीबी समाप्त हई। २०१७ के सर्वेक्षण के अनुसार, केवल कतर में नेपालियों की संख्या ३५०,००० (साढ़े तीन लाख) है और अगर हम कल को देखें तो केवल खाड़ी देशों में लगभग ८ लाख नेपाली नागरिक काम कर रहे हैं। उनमें ७ लाख मुस्लिम हैं। फिर हमारे राष्ट्राध्यक्षों के सस्ते अनुबंध के कारण, नेपाली श्रमिकों को बहत कम वेतन पर काम करना पड़ता है। यही कारण है कि भारत के बाद नेपाल के नागरिक वहां सबसे अधिक हैं। अब, अरब क्रांति के बाद, ऐसा लगता है कि नेपाली मसलमानों का सुनहरा भविष्य अंधकार के कगार पर है। क्योंकि प्राकृतिक गैस और पेट्रोल से भरपूर ये अरब देश अब तेजी से अंत की ओर बढ़ रहे हैं और बड़ी संख्या में विदेशी कामगार लौट रहे हैं। सैकड़ों कंपनियां दिवालिया हो गई हैं। इसलिए, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि नेपाली मसलमानों के लिए भी खाड़ी देशों का स्वर्ण यग अब शीर्घ समाप्त होने वाला है, इसलिए देश में ही मुसलमानों को अपने लिए

रोजगार के अवसर पैदा करने के बारे में गंभीरता से सोचना होगा। हमें व्यापार, उद्योग, हस्तशिल्प, कृषि और शिक्षा की ओर बढ़ना होगा।

## मुसलमानों का राजनीतिक भविष्य

राजनीति और सत्ता जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। जो राष्ट्र राजनीति से दूर हो जाते हैं वे अधीनस्थ और गुलाम बना लिए जाते हैं, और राजनीति में भूमिका निभाने वाले राष्ट्र शासक बन जाते हैं। राजनीति और सत्ता के बिना, राष्ट्रों का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। सदियों से जो क्रांतियां नहीं हुईं, उन्हें राजनीति और सत्ता के प्रभाव के तहत वर्षों में लाया जा सकता है। क्योंकि यहां सिस्टम पर एकाधिकार होता है। चाहे वह मनुष्य की शैक्षिक समस्या हो या आर्थिक या सुरक्षा व अस्तित्व और विकास की समस्याएं, यह सभी सरकार और राजनीति के प्रभाव में क्षणों में हल हो जाते है। किसी भी देश या राष्ट्र के विकास का मार्ग राजनीतिक प्रणाली द्वारा निर्धारित होता है।

इतिहास के एक वस्तुनिष्ठ अध्ययन ने यह साबित कर दिया है कि मसलमान इस देश में एक हजार साल बाद भी अपना राजनीतिक अस्तित्व स्थापित करने में विफल रहे हैं। वे अभी तक इस देश में कोई भी मुस्लिम राजनीतिक नेतृत्व नहीं बना पाए हैं। ऐसा नहीं है कि कोई प्रयास नहीं किया गया। कुछ शाहीन सिफत लोगों ने इस क्षेत्र में कदम रखा भी परंतु हमारी राष्ट्रीय अराजकता, सामाजिक अज्ञानता, पिछड़ेपन और निम्न सोच ने उनका समर्थन नहीं किया। जब यह समाज एक मेज पर बैठकर

भोजन नहीं कर सकता तो इतने बड़े मद्दे पर कैसे एकजुट हो सकता है? नेपाल के नौ जिलों में मुसलमान निर्णायक स्थिति में हैं। लेकिन चाहे मुस्लिम नेता हों या राष्ट्र, सभी बड़ी बड़ी पार्टियों का शिकार बन जाते हैं। आज तक, उन्हें वोट बैंक के रूप में उपयोग किया जाता रहा है।

राजनीति में मुसलमानों की रुचि पहले से बहुत कम रही है लेकिन अब इस में कुछ वृद्धी देखने को मिल रही है लेकिन वे सभी बैसाखी के सहारे चल रहे हैं। मुस्लिम छात्रों को चाहिए कि यथासंभव वे राजनीति विज्ञान से स्नातक हों, कानून की डिग्री प्राप्त करें और राष्ट्रीय राजनीति में भाग लेने का प्रयास करें।

## मुसलमानों के बीच वैज्ञानिक, अनुसंधान तथा संपादकीय अकादमियां

यदि हम नेपाल को एक शोध, लेखन और प्रसारण के दृष्टिकोण से देखते हैं, तो हमें एक भी ऐसा उल्लेखनीय संस्थान या अकादमी नहीं मिलती जिसकी स्थापना केवल इसी उद्देश्य के लिए की गई हो, जहां से उलमा और लेखकों की पुस्तके प्रकाशित करने की उतकृष्ट व्यवस्था हो, बजट हो। जबकि यहां ऐसे संस्थानों की अधिक जरूरत है। उलमा की सैकड़ों पुस्तकें कीड़े खाकर बर्बाद कर रहे हैं और कोई भी उन्हें प्रकाशित करने वाला नहीं है।

नेपाली में किसी भी सुन्नी आलिम का कोई भी कुरान का अनुवाद अब तक प्रकाशित नहीं हुआ है।

इतिहास, हदीस, फिक्ह , धर्मशास्त्र और पाठयपुस्तकों का नेपाली में अनुवाद करने के लिए हमारे पास कोई एसा संस्थान होना जाहिए जहां से यह कार्य किया जा सके। इस परियोजना को भी धनवान शुभचिंतकों का ध्यान चाहिए।

जहां हम फलहीन जल्सों पर लाखों रुपये खर्च करते हैं, हम अपने जल्सों का बजट कम करके इस तरह के लेखन और प्रसारण अकादमियों की नींव रख सकते हैं।

## फलहीन जल्सों की प्रचुरता

जिस तरह यह भारत के लिए एक गंभीर समस्या बन गई है, उसी तरह हमारा नेपाल भी इससे अप्रभावित नहीं है। जल्से इतने अधिक हो रहे हैं कि लगता है जल्सों की बाढ़ आगई है, तथा अधिकांश जल्से फलहीन ही होते हैं। लाखों रुपये खर्च करने के बाद भी, अराजकता और अभाव के अलावा कुछ हाथ नहीं आता। जिस गाँव में कोई पार्टी न हो. एक जल्सा करके देख लीजिए वहाँ कई पार्टियाँ हो जाएंगी। इसका कारण यह है कि आजकल ज्यादातर जल्से सस्ती प्रसिद्धि एवं लाभ अर्जित करने के लिए आयोजित कीए जा रहे हैं। राष्ट्र निर्माण की भावना शून्य है। अज्ञानी उपदेशकों, नाचने वाले कवियों और हास्य कलाकारों के आगमन से राष्ट्र का निर्माण तो नहीं होता, किंतु उनकी जेब अवश्य गर्म हो जाती है, और अस्थायी रूप से लोगों का मनोरंजन हो जाता है।

पिछले सौ वर्षों में जिस तरह से हमने लोगों को प्रशिक्षित किया है, यह उसका परिणाम है कि उनका दिमाग किसी भी उतकृष्ट आलिम और गंभीर प्रवचन को सुनने को तैयार नहीं। उन्हें वही उपदेशक और कवि चाहिए जो उनके अज्ञानी स्वभाव का मनोरंजन कर सके। इसके पूरे जिम्मेदार हमारे वह उलमा और नेता हैं जो इस तरह के जल्सों के ठेकेदार हैं। धार्मिक ज्वलंत मुद्दों और वर्तमान स्थिति पर बोलने के लिए किसी की जीभ नहीं खुलती और किसी व्यक्ति के खिलाफ बोलने में गले का खून सूख जाता है, नसें सूज जाती हैं।

डॉ इकबाल लाहौरी ने कहा था: "जब किसी राष्ट्र का अंत होने वाला होता है, तो वह जोशीले भाषणों और भावनात्मक नारों के व्यसनी हो जाते हैं।" आज हमारे साथ ऐसा ही हआ है। निष्क्रिय और अज्ञानी वक्ताओं को निमंत्रण देकर हम धार्मिक चरमपंथ को बढ़ावा दे रहे हैं। आज, हमारे लोग अल्लाह वाले उलमा, असली बुद्धिजीवियों और विचारकों के चेहरे को देखने के लिए तरस रहे हैं। जितना संभव हो मदरसों से अपने इल्म पर अमल करने वाले उलमा और उपदेशकों को बुलाने की कोशिश करें, राष्ट्र को बेवकूफ बनाना बंद करें और अपनी श्रेष्ठता के नारे लगाना छोड दें।

हमारी जल्सों और धार्मिक चरणों के माध्यम से मुसलमानों में राजनीतिक जागरूकता पैदा करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए। जिस तरह

से उलमा धार्मिक मामलों में राष्ट्र का नेतृत्व करते हैं, राजनीतिक क्षेत्र में भी नेतृत्व करना उनका कर्तव्य है ताकि मस्लिम विरोधी ताकतों के उपकरण न बन जाएं। यह एक बड़ी त्रासदी और आश्चर्यजनक बात है कि जब भी कोई जल्सा होता है, तो पोस्टर के निचले भाग पर लिखा जाता है कि इस जल्से का मौजूदा राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। आखिर इस वाक्य से आप क्या संदेश देना चाहते हैं? यदि आप वर्तमान राजनीति से संबंधित नहीं हैं तो क्या अतीत और भविष्य से संबंधित हैं या आप राजनीतिक प्राणी न बनकर इस दुनिया में एक स्वर्गीय प्राणी की तरह रहना चाहते हैं, इसी निम्न और नकारात्मक सोच ने हमें अपमान की गहरी गुफा में ढकेल दिया है। उलमा को मुसलमानों के शानदार राजनीतिक इतिहास का अध्ययन करना चाहिए। उलमा ने हर युग में क्रांतियों को जन्म दिया है और राजनीति और नेतृत्व के माध्यम से देश की तानाशाही सरकारों को भी चुनौती दी है। इस तरह की मानसिकता हार, कम आत्मसम्मान, अभाव की भावनाओं, आत्मविश्वास व साहस की कमी और जीवन की हलचल से पीछे हटने के कारण उत्पन्न होती है।

नेपाल वर्तमान में नवनिर्माण के दौर से गजर रहा है, इसकी राजनीतिक ईंटें बिछाई जा रही हैं, अगर मुसलमान इस समय एक भी ईट बिछाने में सफल हो

जाते हैं, तो उन्हें इस देश का संस्थापक कहा जाएगा। मैं अपने देश के सभी राजनीतिक और धार्मिक नेताओं, बद्धिजीवियों, लेखकों और संपादकों से कहना चाहंगा कि इस समय आपको अपने सभी आंतरिक और बाहरी मतभेदों को छोडकर एकजुट होकर इस देश के निर्माण और विकास में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए ताकि भविष्य की पीढ़ियों को आपके दवारा लगाए गए पेड़ से छाया मिले। आज की हमारी थोडी कोताही हमें सौ साल पीछे कर दोगी।

आज हालात निराशाजनक नहीं हैं। नेपाल और नेपाल के मुसलमानों का राजनीतिक भविष्य हमारे लिए बहुत उज्ज्वल है। मैं प्रदेश नंबर २ के मुख्यमंत्री मुहम्मद लाल बाबू रावत को बधाई देता है, जो आज मुख्यमंत्री की कर्सी पर बैठे हैं। राजनीति में उनकी रुचि, अथक परिश्रम, समर्पण और ईश्वर की कृपा ने उन्हें आज सत्ता में लाया है। यह मुसलमानों के लिए बहुत गर्व और उत्साह की बात है कि लोकतांत्रिक नेपाल में प्रदेश नंबर २ का पहला मुख्यमंत्री मुसलमान चुना गया।

## जल्सों से अधिक संगोष्ठियों और परिसंवादों का आयोजन

अनपढ़ समाज में जल्से की आवश्यकता है, लेकिन यह एक त्रासदी है कि ऐसे क्षेत्रों में जहां विद्वान और

साहित्यिक लोग हैं, लोग वहां भी जल्सों और जुलूसों में उलझे हुए हैं। सार्वजनिक और सामाजिक व्यवहार को बदलने तथा वैज्ञानिक और साहित्यिक माहौल बनाने के लिए आवश्यक है कि सही मार्ग पर आकर आधनिक आवश्यकताओं के अनुसार वैज्ञानिक, साहित्यिक, फिक्ही, सामाजिक और शैक्षिक व अनुसंधान सेमिनार, सम्मेलनों और संगोष्ठियों का आयोजन करें ताक हमारे राष्ट्र का बौद्धिक दृष्टिकोण बदल सके। हम जो पैसा अनावश्यक रूप से खर्च करते हैं, उसे उद्देश्यपूर्ण काम पर खर्च करें। आज का सय्यिदुल कौनैन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और फिक्ही शैक्षिक और सुधार संगोष्ठी इस सकारात्मक दिशा में प्रगति का एक चमकदार उदाहरण है। इसके संस्थापकों और आयोजकों को बधाई, जिन्होंने नेपाल जैसी घाटी में पत्थर पर गुलाब उगाने का काम किया है।

فرد قائم ربط ملت سے ہے تنہا کچھ نہیں
موج ہے دریا میں اور بیرون دریا کچھ نہیں

व्यक्ति राष्ट्र से जुड़कर जीवित रहता है, वह अकेला कुछ नहीं
जैसे लहरें नदी में होती हैं और नदी के बाहर कुछ भी नहीं

**मुहम्मद रजा कादिरी मिस्बाही**
अध्यापक: जामिया अशरफिया, मुबारकपुर,
आजमगढ़ (यूपी)
२६ अप्रैल २०१८/९ शाबान अल-मुअज्जम, गुरुवार
ईमेल: Salicraza73@gmail.com
मोब: ७८६०७०४४९१

# Nepal, Nepali Musalmanon ki Samasyaein aeon Samadhan

**(March 2021)**

**RASHTRIYA ULAMA COUNCIL, NEPAL**
Kirtipur, 2- Maitri Nagar, Kalanki, Kathmandu, Nepal
Mob. No. 9802078692 / 9846964587